بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **01.05.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

रब्बुल आलमीन के प्रकट होने का सिंहासन बनने के लिए आवश्यक है कि तुम अपने हाथ से काम करो और दुर्बलों की सहायता हेतु तत्पर रहो। न केवल अपनों की अपितु ग़ैरों की भी सहायता करने का प्रयास करें तो इसके व्यापक परिणाम हैं जो समाज को परस्पर दृढ़ता के साथ जोड़ देते हैं एक दूसरे की सेवा करने से, और समाज का प्रत्येक वर्ग यदि इसके अनुसार कर्म करे तो एक सुन्दर समाज की स्थापना हो जाती है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन की घटनाएं बयान फ़रमाते हैं तो बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से उनमें से वे परिणाम निकालते हैं जो एक मोमिन के ईमान का उपयुक्त मार्ग दर्शन करके उसे ख़ुदा तआला तथा दीन की वास्तविक पहचान करने वाला और इसको समझने वाला बनाए। एब बार आप अपनी एक तक़रीर में आयःतुल कुर्सी की व्याज़्या फ़रमा रहे थे तो उसके इस अंश, कि لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ की व्याज़्या में फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि अब बताओ कि जब तुम्हारा ऐसा स्वामी है कि जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है, सब कुछ उसी का है तो उसके समान किसी अन्य को तुम कैसे अपना स्वामी बना सकते हो। लोग कहते हैं कि हम ख़ुदा के अतिरिक्त किसी को नहीं पूजते तथा उसके अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करते। परन्तु उनके लिए भेंट चढ़ाते हैं तथा उनसे मुरादें मांगते हैं क्यूंकि वे ख़ुदा तआला के मित्र हैं और मुक्ति के लिए वे हमारी सिफ़ारिश ख़ुदा तआला के समक्ष करेंगे। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमारी अनुमति के बिना तो कोई मुक्ति के लिए सिफ़ारिश नहीं कर सकता। इस ज़माने में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बढ़ कर किस ने बड़ा इंसान होना था परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार जब नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब के बेटे अब्दुर्रहीम ख़ान के लिए, जब कि वह बीमार था, दुआ की तो इल्हाम हुआ कि यह बचता नहीं। आपको विचार आया कि नवाब साहब अपना सब कुछ छोड़ कर क़ादियान आ रहे हैं, उनका बेटा मर गया तो उनकी परीक्षा कड़ी न हो जाए इस लिए आपने ख़ुदा तआला के समक्ष निवेदन किया कि इलाही मैं इस लड़के के स्वास्थय के लिए प्रार्थना करता हूँ। इस पर इल्हाम हुआ कि مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ अर्थात तुम कौन हो कि मेरी अनुमति बिना सिफ़ारिश करते हो। देखो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कितना बड़ा इंसान था, तेरह सौ साल से दुनिया को उसकी प्रतीक्षा थी परन्तु वह भी जब सिफ़ारिश करता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कौन होते हो कि बिना अनुमति सिफ़ारिश करो। हज़रत साहब फ़रमाते हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, कि जब मुझे यह इल्हाम हुआ तो मैं गिर पड़ा और मेरा शरीर कांपने लगा, मेरे प्राण निकलने के निकट थे। परन्तु जब मेरी यह दशा हुई तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ठीक है हम सिफ़ारिश की अनुमति दे देते हैं, मुक्ति की सिफ़ारिश करो। इस प्रकार आपने सिफ़ारिश की और अब्दुर्रहीम ख़ान स्वस्थ हो गए। यह ख़ुदा तआला की कृपा थी परन्तु यह सिफ़ारिश की दुआ क़बूल हुई, अनुमति मिली। परन्तु मसीह मौऊद जैसे मनुष्य को जब अल्लाह तआला कहता है कि तुम कौन हो जो सिफ़ारिश करो। तो अन्य लोग जो बड़े बने फिरते हैं उनमें क्या सामर्थ्य है कि किसी की सिफ़ारिश कर सकें? अतः इस बात को हर एक अहमदी को याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी यही फ़रमाया है कि जब अनुमति प्रदान होगी तो सिफ़ारिश होगी।

फिर अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को किस प्रकार अपनी शक्ति के नमूने दिखाया करता था, उसका एक उदाहरण देते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि एक बार आपको खांसी की शिकायत थी। मुझे आपको दवाई आदि पिलाने की सेवा दी गई, परामर्श के रूप में निवेदन भी कर दिया करता था कि यह न खांए, वह न खांए। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल रज़ीअल्लाह तआला अन्हु के नुस्ख़े भी तैय्यार होकर प्रयोग में लाए जाते थे तथा अंग्रेज़ी दवाइयां भी, परन्तु खांसी बढ़ती ही जाती थी। यह 1907 की घटना है और अब्दुल हकीम मुर्तद ने आपकी खांसी के विषय में सुन कर लिखा था मिर्ज़ा साहब सिल के रोग में लिप्त होकर सिधारेंगे। इस लिए हमें कुछ यह भी भय था कि अनुचित ढंग से भी उसे कोई ख़ुशी का बहाना न मिल सके। परन्तु आपको अत्यधिक खांसी थी।

ऐसी हालत में बाहर से कोई दोस्त आए और भेंट के रूप में कुछ फल लेकर आए। मैं ने वे फल हुज़ूर की सेवा में पेश कर दिए। आपने उनमें से कोई चीज़, सम्भतः केला था, उठाया। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं- क्यूंकि मैं दवाई आदि पिलाया करता था, इस कारण से अथवा मुझे कोई सीख देने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह खांसी में कैसा होता है? मैं ने कहा कि अच्छा तो नहीं होता, परन्तु आप मुसकुरा पड़े और छील कर खाने लगे। मैं ने फिर अनुरोध किया कि खांसी अत्यधिक है और यह चीज़ खाने में अच्छी नहीं। आप फिर मुस्कुराए और खाते रहे। मैं ने अपनी मूर्खता के कारण फिर अनुरोध किया कि नहीं खाना चाहिए। इस पर आप फिर मुस्कुराए और फ़रमाया मुझे अभी इल्हाम हुआ है कि ''खांसी दूर हो गई'' इस प्रकार उसी समय खांसी जाती रही, जबकि उस समय न कोई दवाई सेवन की और न कोई परहेज़ किया बल्कि बद-परहेज़ी की, और खांसी, फिर भी दूर हो गई। यद्यपि इससे पहले एक महीना इलाज होता रहा था और खांसी दूर न हुई थी तो यह इलाही विधान था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस घटना के उदाहरण के पश्चात एक उदाहरण दिया जो ईमान को ताज़ा करता है और जो लेख राम के विषय में है लेख राम की घटना को भी उदाहरण के रूप में पेश किया जा सकता है। जब ख़ुदा तआला चाहे तो सेहत के सारे साधनों के होते हुए भी बीमारी पैदा हो जाती है। अब लेख राम के विषय में ख़ुदा तआला ने यह फ़रमा दिया था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह इल्हाम हुआ था कि ईद के दूसरे दिन उसकी मृत्यु होगी। यद्यपि परिस्थितयां प्रत्यक्ष में इसके विरुद्ध थीं। 6 मार्च उसकी मौत के लिए नियुक्त थी। इसके बावजूद वह लाहौर पहुंच गया, बाहर निकलने का अवसर मिल गया और उसकी हत्या हो ज़ी गई। यह उदाहरण इस बात का है कि स्वास्थ्य एंव सुरक्षा के प्रबन्धों के बावजूद भी इंसान का विनाश हो सकता है। अतः अल्लाह तआला इंसान के कामों में दख़ल देता है और जब वह चाहता है और जिस प्रकार चाहता है अपनी शक्ति दिखाता है।

साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहब का भी ज़िक्र हुआ उसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक घटना में यूँ फ़रमाते हैं कि हमारा एक छोटा भाई था जिसका नाम मुबारक अहमद था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को वह बड़ा ही प्यारा था। मुझे याद है कि जब हम छोटे होते थे, हमें मुर्ग़ियां पालने का शौक़ हुआ। सवेरे सवेरे हम जाते, मुर्ग़ियों के दड़बे खोलते, अंडे गिनते और फिर गर्व के साथ एक दूसरे से मुक़ाबला करते कि मेरी मुर्ग़ी ने इतने अंडे दिए हैं और मेरी ने इतने। हमारे इस शौक़ में मुबारक अहमद मरहूम भी शामिल हो जाता। जब मुबारक अहमद मरहूम बीमार हुआ तो दादी (सियालकोट की एक महिला उनकी देख भाल के लिए नियुक्त थी जो दादी कहलाती थी) ने कह दिया कि यह बीमार इस लिए हुआ है कि मुर्ग़ियों के पीछे बहुत जाता है, वहां सदैव रहता है और गन्दी जगह है। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बात सुनी तो हज़रत अम्मा जान से फ़रमाया कि मुर्ग़ियां गिन लो, इन बच्चों को इनका मूल्य दे दिया जाए और मुर्ग़ियां काट कर खा ली जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मुबारक अहमद बहुत प्यारा था लेकिन यही बेटा जब वफ़ात पा गया जिसकी इतनी देख भाल आपने की, जिसको इतना प्यार किया, लाड किया। उस समय के हालात का चित्रण हज़रत मुस्लेह मौऊद ने विभिन्न अवसरों पर किया है कि फिर क्या दशा होती थी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की। फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हमारे छोटे भाई मुबारक अहमद मरहूम से बड़ा प्रेम था। जब वह बीमर हुआ तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इतने परिश्रम तथा इतने ध्यान से उसका इलाज कराया कि कुछ लोग समझते थे कि यदि मुबारक अहमद की मृत्यु हो गई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बड़ा भारी दुःख होगा। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल बड़े साहसी एंव बलवान व्यक्ति थे। जिस दिन मुबारक अहमद की मृत्यु हुई उस दिन सुबह को नमाज़ पढ़ा कर आप मुबारक अहमद को देखने के लिए पधारे। मुझे उन दिनों दवाईयां देने तथा उनकी देख भाल करने का काम दिया गया था। मैं ही नमाज़ के बाद हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल को अपने साथ लेकर आया था। मैं था, ख़लीफ़ः अव्वल थे, डाक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग थे और सम्भवतः डाक्टर ख़लीफ़ः रशीदुद्दीन साहब भी थे। जब हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल, मुबारक अहमद को देखने के लिए पहुंचे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हालत अच्छी लगती है, बच्चा सो गया है। परन्तु वास्तव में वह अन्तिम समय था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जब मैं हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल को लेकर आया उस समय मुबारक अहमद का सिर उत्तर की ओर तथा पाँव दक्षिण की ओर थे। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल बाईं ओर खड़े हुए और उन्होंने नाड़ी पर हाथ रखा, परन्तु नाड़ी अनुभव न हुई। इस पर आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि हुज़ूर मुश्क (कस्तूरी) लाएं और स्वंय हाथ कोहनी के निकट रख कर नाड़ी देखनी आरम्भ कर दी कि सम्भवतः वहां नाड़ी अनुभव होती हो। परन्तु वहां भी नाड़ी अनुभव न हुई तो फिर आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बोधित होकर कहा कि हुज़ूर जल्दी मुश्क (कस्तूरी) लाएं तथा स्वंय बग़ल के निकट अपना हाथ ले गए तथा नाड़ी देखनी आरम्भ की और जब वहां भी नाड़ी अनुभव न हुई तो घबरा कर कहा हुज़ूर जल्द मुश्क लाएं। इसी बीच हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाबियों के गुच्छे से चाबी तलाश करके संदूक का ताला खोल रहे थे। जब अन्तिम बार हज़रत मौलवी साहब ने घबराहट के साथ कहा कि हुज़ूर मुश्क जल्दी लाएं और इस विचार से कि मुबारक अहमद की मृत्यु से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बड़ा दुःख होगा, बहादुर होने के बावजूद हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल के पाँव कांप गए और ख़लीफ़ः अव्वल खड़े न रह सके और ज़मीन पर बैठ गए। उनका विचार

था कि सञ्भतः नाड़ी दिल के निकट चल रही हो तथा मुश्क (कस्तूरी) के द्वारा शक्ति को वापस लाया जा सकता हो परन्तु उनकी आवाज़ से अनुभव होता था कि यह आशा बड़ी दुर्बल थी। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपकी आवाज़ के कज़्न्न को अनुभव किया तो आप समझ गए कि मुबारक अहमद का अन्तिम समय है और आपने संदूक़ खोलना रोक दिया और फ़रमाया मौलवी साहब शायद लड़का फ़ौत हो गया है, आप इतने क्यूं घबरा गए हैं, यह अल्लाह तआला की एक अमानत थी जो उसने हमें दी थी अब वह अपनी अमानत ले गया तो हमें इस पर क्या शिकायत हो सकती है। हम अल्लाह तआला की इच्छा पर पूर्ण रूप से प्रसन्न हैं। अतः आपने उसी समय बैठ कर दोस्तों को पत्र लिखने आरञ्भ कर दिए।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर इसी के विषय में यही फ़रमाते हैं, क़ादियान के लोगों को सञ्बोधित करते हुए कि यहां के रहने वाले लोगों ने देखा होगा कि मौलवी अब्दुल करीम साहब और मुबारक अहमद की बीमारी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इलाज आदि कराने का कितना ध्यान था। देखने वालों को ऐसा लगता कि जैसे आप अपने सिलसिले की प्रगति उनके जीवन से ही समझते थे। उन दिनों इसके अतिरिक्त कोई बात न होती थी कि किस प्रकार इलाज हो तथा क्या इलाज किया जाए परन्तु उनकी मृत्यु के समय क्या हुआ? यही कि उस समय अचानक आपकी ऐसी हालत बदली कि आश्चर्य सा हो गया। या तो इतना जोश कि सुबह से लेकर शाम तक उन्हीं के इलाज आदि की चर्चा है। मौलवी अब्दुल करीम साहब का जब अन्तिम समय आया था उस समय भी और अज़ीज़म मुबारक अहमद का अथवा साहिबज़ादा मुबारक अहमद का समय आया, उस समय भी। या आप इस बात पर हंस हंस कर तथा बड़ी प्रसन्नता पूर्वक तक़रीर फ़रमा रहे थे कि उनकी वफ़ात के विषय में ख़ुदा तआला ने पहले ही बता दिया था।

फिर आपने इस घटना का एक स्थान पर इस प्रकार भी वर्णन फ़रमाया है कि मुबारक अहमद की वफ़ात के पश्चात जब आप घर से बाहर तशरीफ़ लाए, बाहर लोग थे। बाहर तशरीफ़ ले गए तो बैठते ही आपने जो तक़रीर की, उसमें फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला की ओर से परीक्षा है और हमारी जमाअत को इस प्रकार की परीक्षा के समय खेद नहीं करना चाहिए। फिर फ़रमाया कि मुबारक अहमद के विषय में अमुक समय पर मुझे इल्हाम हुआ था कि यह छोटी आयु में उठा लिया जाएगा। इस लिए यह तो प्रसन्नता का विषय है कि ख़ुदा तआला का इल्हाम पूरा हुआ।

इस प्रकार ये घटनाएं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन की विभिन्न बातों को प्रकाश में लाती हैं। बच्चे की सेवा, उसके उपचार की चिंता, अपने निकट के साथी की चिंता, उसके इलाज की ओर ध्यान तथा उच्चतम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए घोर प्रयास करने का उपदेश कि वास्तविक उद्देश्य ख़दा तआला की प्रसन्नता है तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास है और जो उसने ख़बरें दी हैं उनके पूरा होने पर जहां एक ओर संतोष है वहीं दूसरी ओर जहां इंसानों को सेवा करने की आवश्यकता है वहां पूरे ज़ोर से तथा पूरे ध्यान के साथ सेवा भी करनी है।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद एक घटना बयान करते हैं जिसका विषय यह है कि बन्दों की शारीरिक सेवा भी करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला की रबूबियत का प्रदर्शन हो सके। फ़रमाते हैं कि मुझे एक दृश्य कभी नहीं भूलता। मैं उस समय छोटा सा था, सोलह सत्रह वर्ष की आयु थी कि उस समय हमारी एक छोटी बहिन जो कुछ महीने की थी, फ़ौत हो गई। जनाज़े के बाद मृत शरीर को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने हाथों पर उठा लिया। उस समय हज़रत मिर्ज़ा इसमाईल बेग साहब आगे बढ़े और कहने लगे हुज़ूर यह शरीर मुझे दे दीजिए, मैं उठा लेता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुड़ कर उनकी ओर देखा और फ़रमाया- यह मेरी बेटी है अर्थात बेटी होने के कारण इसकी एक शारीरिक सेवा जो इसकी अन्तिम सेवा है यही हो सकती है कि मैं स्वंय इसको उठा कर ले जाऊँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हुए इससे यह परिणाम निकालते हैं कि रब्बुल आलमीन का सिंहासन बनना चाहते हो तो तुम्हारे लिए भी आवश्यक है कि प्राणियों की शारीरिक सेवा करो। यदि तुम दीन की सेवा में अपनी सारी सञ्मत्ति दे देते हो, अपनी पूरी आय इस्लाम की सेवा के लिए ख़र्च कर देते हो तो तुम स्वामित्व का निशान तो बन जाओगे अथवा स्वामित्व की छवि बन जाओगे परन्तु रब्बुल आलमीन के प्रकटन का सिंहासन नहीं बनोगे। क्यूंकि रब्बुल आलमीन के प्रकटन का स्थान बनने के लिए आवश्यक है कि तुम अपने हाथ से काम करो तथा दुर्बलों की सहायता के लिए अग्रसर रहो। अतः यह सुन्दर व्याज़्या है रब्बुल आलमीन के प्रकटन का सिंहासन बनने के लिए कि अपने हाथ से न केवल अपनों की बल्कि ग़ैरों की भी सेवा करने का प्रयास करें। यदि विचार करें तो इसके बड़े व्यापक परिणाम निकलते हैं जो क़ौम को आपस में जोड़ देते हैं एक दूसरे की सेवा करने से और समाज का प्रत्येक वर्ग यदि इसके अनुसार कर्म करे तो एक सुन्दर समाज बन जाता है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अल्लाह पर निर्भरता, दुआ की क़बूलियत, अपनी सत्यता पर सञ्पूर्ण विश्वास होने का एक वृत्तांत बयान करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बार कपूरथला के अहमदियों तथा ग़ैर अहमदियों का वहां की एक मस्जिद के सञ्बंध में मुक़दमा हो गया। जिस जज के पास यह मुक़दमा था उसने विरोधी धारणा बनानी आरञ्भ कर दी। इस पर कपूरथला की जमाअत ने घबरा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ के

लिए लिखा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके जवाब में उन्हें तहरीर फ़रमाया कि यदि मैं सच्चा हूँ तो मस्जिद तुमको मिल जाएगी। परन्तु दूसरी ओर जज ने लगातार अपनी विरोधी विचार धारा जारी रखी और अन्ततः उसने अहमदियों के विरुद्ध निर्णय लिख दिया। परन्तु दूसरे दिन जब वह निर्णय सुनाने के लिए न्यायालय में जाने की तैय्यारी करने लगा तो उसने नौकर से कहा कि मुझे बूट पहना दो। नौकर ने एक बूट पहनाया और दूसरा अभी पहना ही रहा था कि खट की आवाज़ आई। उसने ऊपर देखा तो जज का हार्ट फ़ेल हो चुका था। उसकी मृत्यु के पश्चात दूसरे जज को नियुक्त किया गया और उसने पहले निर्णय को बदल कर हमारी जमाअत के हक़ में निर्णय कर दिया जो दोस्तों के लिए एक बड़ा भारी निशान बना और उनके ईमान आकाश तक पहुंचे। अतः अल्लाह तआला की यह सुन्नत है कि वह अपने नबियों के द्वारा निरन्तर परोक्ष के समाचार देता है जिनके पूरा होने पर मोमिनों के ईमान अधिक व्यापक हो जाते हैं। यह ग़ैब के समाचारों का ही परिणाम था कि जो लोग हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए उनके दिल इतने दृढ़ हो गए कि अन्य लोग तो मौत को देख कर रोते हैं परन्तु सहाबा में से किसी को भी जब ख़ुदा तआला के रास्ते में जान देने का अवसर मिलता तो वे प्रसन्नता के कारण उछल पड़ते और कहते **فزت وربی الکعبہ** अर्थात काबे के रब की क़सम, मैं सफल हो गया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक कश्फ़ के कुछ ही मिन्टों में पूरा होने की घटना बयान करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि कभी जागते हुए एक दृश्य कश्फ़ में दिखाया जाता है परन्तु वह इस योग्य नहीं होता कि उसका फल खोजा जाए बल्कि पौ फटने की भांति उसी रंग में प्रकट हो जाता है जिस रंग में अल्लाह तआला इंसान को दृश्य दिखाता है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कश्फ़ों में हमें इसके उदाहरण मिलते हैं।

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कश्फ़ की अवस्था में देखा कि मुबारक अहमद चटाई के पास गिरा पड़ा है तथा उसे बड़ी चोट लगी है और उसके कपड़े रक्त से लाल हो गए हैं।

फिर क़ादियान की आरम्भिक स्थिति का चित्रण तथा फिर क़ादियान की प्रगति का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि एक वह ज़माना था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ कोई आदमी न था फिर वह समय आया कि आपके साथ हज़ारों आदमी थे और अब तो लाखों तक पहुंच गए हैं। फिर किसी ज़माने में पंजाब में भी कोई व्यक्ति आप पर आस्था नहीं रखता था और अब न केवल हिन्दुस्तान में बल्कि दुनिया के सारे महाव्दीपों में अहमदी फैल गए हैं। यदि यह सत्य है कि दुनिया नहीं मानती तो फिर इतने लोग कहां से आ गए? कि यदि हमें अहमदिया जमाअत को, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को, दुनिया नहीं मानती तो इतने लोग कहां से आ गए और अब तो अल्लाह तआला की कृपा से प्रत्येक देश में अहमदी हो रहे हैं अथवा वहां अहमदियत फैल रही है।इस प्रकार ये घटनाएं निःसन्देह ईमान और विश्वास में वृद्धि करने वाली हैं। ख़ुदा तआला हम सबको ईमान और आस्था में बढ़ाता चला जाए तथा हम जमाअत के लाभकारी अंश बनने वाले हों।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने मोहतरमा नसीम महमूद साहिबा पत्नि सैय्यद महमूद अहमद शाह आफ़ कराची का शुभ वर्णन फ़रमाया जिनकी 27 अप्रैल 2015 को 58 वर्ष की आयु में कैन्सर के कारण मृत्यु हो गई थी। मरहूमा की विशेषताओं तथा सेवाओं का वर्णन करने के पश्चात हुज़ूर अनवर ने दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर बुलन्द फ़रमाए तथा उनकी संतान को भी उनकी नेकियां जारी रखने का वरदान दे तथा उनकी दुआओं का उत्तराधिकारी बनाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 01.05.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*